शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

'निबंधमाला' गद्य भाग

शीर्षक - 'गाँधीजी और मैं'

लेखक - पंडित रामनन्दन मिश्र

प्रश्न:- 'गाँधीजी और मैं' शीर्षक संस्मरणात्मक निबंध का लेखक क्यों विद्रोही बन गया, प्रकाश डालें।

उत्तर :- 'गाँधीजी और मैं' शीर्षक निबंध के लेखक पंडित रामनन्दन मिश्र कॉलेज की पढ़ाई समाप्त कर जब घर आये तो उनके मन में पर्दा प्रथा के विरोध की बात उठी। उन्होंने कुछ नौजवानों को इकट्ठा किया और इस प्रथा का किस प्रकार विरोध किया जाए इस पर विचार-विमर्श हुआ। विचार सबों को अच्छा लगा परन्तु इसकी शुरुआत कौन करे, एक बहुत बड़ी समस्या थी श्री मिश्र ने स्वयं इसका बीड़ा उठाया और परिवार के साथ उनका संघर्ष प्रारम्भ हो गया। उनके पूज्य पिता सहित परिवार का कोई भी व्यक्ति इस बात के लिए तैयार नहीं था कि रामनन्दन जी की पत्नी घर से बाहर निकलो बहुत दिनों तक घर वालों का डराने-धमकाने का काम होता रहा परन्तु लेखक ने एक न मानी। गाँधी जी को भी इसमें बीच-बचाव करना पड़ा। उन्होंने रामनन्दन जी की पत्नी को पढ़ाने के लिए राधा बाई तथा दुर्गा बाई को इनकी पत्नी के घर पर भेजा। इसी समय राधा बाई के पिता ~~का~~ मदनलाल जी का पटना में मिलन हो गया और पटना वासियों ने पर्दा प्रथा के विरोध का आन्दोलन तेज कर दिया। गाँधीजी ने रामनन्दन जी से कहा आप अपनी पत्नी राजकिशोरी जी को साबरमती आश्रम भेज दें। राजकिशोरी जी अनुग्रह बाबू के साथ साबरमती आश्रम भेज दी गईं।

लेखक का अपने परिवार के साथ घोर संग्राम छिड़ गया। बहुत प्रयास करने पर भी पिता और पुत्र में बात नहीं बनी। गाँधी जी ने पंडित मिश्र को पत्र के माध्यम से यह सन्देश दिया कि विद्रोही-पुत्र को पिता के धन की आशा नहीं रखनी चाहिए।

शेष आगे—

रामनन्दन जी परिवार से विद्रोह करके अपना घर छोड़ दिया। वे पत्नी के साथ अलग झोपड़ी बनाकर रहने लगे। पंडित मिश्र राष्ट्र सेवा के लिए गाँधी जी के कहने पर परिवार से विद्रोह करके स्वतंत्रता आन्दोलन को गति प्रदान करने में अहम भूमिका निभायी है।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०कृ० सं०महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
14|09|20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अनिवार्य पत्र

'निर्मला' उपन्यास
लेखक - मुंशी प्रेमचन्द

प्रश्न:- भाषा-शैली और उद्देश्य की दृष्टि से प्रेमचन्दजी उपन्यास-कला की समीक्षा कीजिए।

उत्तर: उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द की शैली पर उर्दू का अच्छा प्रभाव है। वस्तुतः प्रेमचन्द उर्दू से ही हिन्दी की ओर आये थे। उनकी शैली परिमार्जित और स्वाभाविक है। हिन्दी और उर्दू के प्रभाव से उन्होंने जिस समन्वय को स्थिर किया है, वह वर्तमान हिन्दी गद्य की विशेषता बन गया है।

प्रेमचन्द की शैली में नाटकियता है। मुहावरों और कहावतों के प्रयोग से भाषा में प्रवाहात्मकता आ गई है। प्रेमचन्दजी की शैली में हास्य और व्यंग्य का पुट भी मिलता है। उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द का व्यंग्य तीखा होता है।

प्रेमचन्द का भाषा पर एकाधिकार था कि वे बड़ी सहजता से कठिन से कठिन सूक्ष्म से सूक्ष्म भाव को व्यक्त कर देते थे। उदाहरण के रूप में उनकी कुछ पंक्तियों को हम देख सकते हैं- "मानव चरित्र न बिल्कुल श्यामल होता है न बिल्कुल श्वेत। उसमें दोनों ही रंगों का विभिन्न परिणाम होता है।"

प्रेमचन्दजी अपनी भाषा-शैली के निर्माता थे। उनकी भाषा-शैली प्रेमचन्दी भाषा-शैली कहलाती है। उनकी रचनाओं में भाषा का व्यवहारिक रूप सर्वत्र दिखाई पड़ता है।

प्रेमचन्द कला को जीवन एवं लोकहित के लिए मानते थे। उन्होंने 'उपन्यास' नामक अपने निबंध में लिखा है- "साहित्य का सबसे ऊँचा आदर्श यह है कि उसकी रचना केवल कला की पूर्ति के लिए न किया जाए। 'कला-कला के लिए' के सिद्धान्त पर किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। वह साहित्य चिरायु हो सकता है, जो मनुष्य की मौलिक प्रवृत्तियों पर अवलम्बित हो। ईर्ष्या और प्रेम,

शेष आगे-

क्रोध और लोभ, भक्ति और विषय, दुःख और लज्जा ये सभी हमारी प्रवृत्तियाँ हैं। इन्हीं की छटा दिखाना साहित्य का परम उद्देश्य है और बिना उद्देश्य के तो कोई रचना हो ही नहीं सकती।"
इस प्रकार भाषा-शैली और उद्देश्य की दृष्टि से प्रेमचन्द की रचनाएँ आदर्श प्रस्तुत करती हैं।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
डॉ० उ०सिं० महा० वि० (सुखसेना) पूर्णियाँ
15/09/20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०- पत्र

दिगंत- भाग-2 - गद्य भाग

शीर्षक - सम्पूर्ण क्रान्ति

लेखक - जयप्रकाश नारायण।

प्रश्न:- आन्दोलन के नेतृत्व के सम्बन्ध में जयप्रकाश जी के क्या विचार थे? आन्दोलन का नेतृत्व वे किस शर्त पर स्वीकार करते हैं?

उत्तर: आन्दोलन के नेतृत्व के सम्बन्ध में जयप्रकाश नारायण के विचार थे कि युवा पीढ़ी नेतृत्व करे। उन्होंने 'यूथ फॉर डेमोक्रेसी' का आह्वान किया था। उनके अनुसार लोकतंत्र में युवाओं की अहम भूमिका है। उनका युवाओं से कहना था-" आप नई पीढ़ी के लोग हैं। देश का भविष्य आपके हाथों में है" उत्साह है आपके अन्दर, जवानी है आपके अन्दर, आप नेता बनिये।

लेकिन युवाओं ने कहा- "जयप्रकाश जी, मार्गदर्शन से काम नहीं चलेगा, आपको नेतृत्व स्वीकार करना पड़ेगा।" जय प्रकाश जी टालते रहे, लेकिन अंत में वेल्लौर जाते समय उन्होंने युवाओं के आग्रह को स्वीकार किया। लेकिन नाम के लिए उन्हें नेता नहीं बनना था। वे इस शर्त पर नेता बनना चाहते थे कि उन्हें पीछे से कोई 'डिक्टेट' नहीं करे। उनके अनुसार- "मुझे सामने खड़ा करके और कोई हमें 'डिक्टेट' करे पीछे से कि क्या करना है, तो इस नेतृत्व को कल मैं छोड़ देना चाहूँगा। मैं सबकी बात सुनूँगा, लेकिन फैसला मेरा होगा।" वे इसी शर्त पर आन्दोलन का नेतृत्व स्वीकार करते हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कृ० सं० महावि० सुरखसेना, पूर्णियाँ

15/09/20